B.N. College, Bhagalpur

A Constituent unit of Tilka Manjhi Bhagalpur University

Department of History

Topic : The Rise of Napoleon (PPT)

B.A. Part-1

Prepared by : Sri Pinku kumar

Asst. Professor (Dept. of History)

B.N. College Bhagalpur

Contact (whatsApp) no- 7982166260

Email id- kpinku348@gmail.com

Edit with WPS Office

नेपोलियन का उत्थान

नेपोलियन का परिचय

- नेपोलियन का जन्म 15 अगस्त, 1769 ई. को कोर्सिका टापू पर हुआ था। उसका पिता कार्लो बोनापार्ट जो कि एक वकील था परंतु परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। नेपोलियन के जन्म के वर्ष ही फ्रांस ने कोर्सिका द्वीप को खरीद लिया जिसे कोर्सिकावासी स्वीकार करने को तैयार नहीं थे। फलतः फ्रांस के विरुद्ध वहां असंतोष व्याप्त हो गया।
- इस समय कोर्सिका को स्वतंत्र कराने के लिए आंदोलन चल रहा था। फ्रांसीसी सरकार ने कोर्सिका के लोगों को कई रियायतें दी, ताकि फ्रांस के समर्थक बन जाए। इस क्रम में नेपोलियन को फ्रांस के सैनिक विद्यालय में पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति मिल गई। इस विद्यालय में सामंतों एवं संपन्न लोगों के बच्चे पढ़ते थे, जिनकी जीवन शैली आरामदायक थी। नेपोलियन को यहां अपनी गरीबी और विदेशी होने के कारण हीन भावना से ग्रसित होना पड़ा।

Edit with WPS Office

नेपोलियन के उदय की पृष्ठभूमि

- जब फ्रांस में राज्य क्रांति हुई, तो नेपोलियन को अपनी उन्नति के लिए अच्छा अवसर प्राप्त हुआ। वह अपने परिवार सहित फ्रांस वापस लौट आया और वहां क्रांतिकारी सेना में सम्मिलित हो गया।
- उसने उच्च सैनिक शिक्षा प्राप्त की थी। फ्रांसीसी सेना के पुराने पुलिस अफसर विदेशी शत्रुओं से जा मिले थे और कोई भी योग्य व्यक्ति इस स्थिति का उपयोग कर अच्छी उन्नति कर सकता था। नेपोलियन इस स्थिति से पूरा पूरा लाभ उठाया।
- वह जैकोबिन दल में सम्मिलित हो गया। जैकोबिन दल की महत्ता के बढ़ने के साथ-साथ नेपोलियन की सैनिक क्षमता भी क्रांतिकारियों के समक्ष आने लगी। उसे जो भी कार्य सौंपा गया, सफलतापूर्वक संपन्न किया। वस्तुत: 'जैकोबिन और जिरोंदिस्त' फ्रांसीसी व्यवस्थापिका सभा के दो प्रमुख दल थे जो अपनी अलग-अलग विचारधारा रखते थे। नेपोलियन ने आतंक के राज्य के समय अनेक विद्रोह को शांत करने में भाग लिया।
- नेपोलियन को विशेष उन्नति का अवसर तब मिला, जब डायरेक्टरी की सरकार स्थापित हुई। डायरेक्टरी के सदस्य 'जनरल बरा' की सहायता से उसने क्रांति के प्रमुख नेताओं से परिचय प्राप्त किया। पेरिस के बड़े-बड़े लोगों से उसका संपर्क बढ़ा।

Edit with WPS Office

नेपोलियन के उदय की पृष्ठभूमि-1

- इसी समय नेपोलियन ने सेनापति बोआर्ने की विधवा श्रीमती बोआर्ने से विवाह किया। सेनापति बोआर्ने की आतंक के राज्य में हत्या कर दी गई थी। उसकी विधवा प्रभावशाली महिला थी। वह फ्रांस के महत्वपूर्ण व्यक्तियों में गिना जाने लगा। नेपोलियन ने आतंक के राज्य के समय अनेक विद्रोह को शांत करने में भाग लिया।
- डायरेक्टरी की सरकार ने जब ऑस्ट्रिया पर विजय करने के लिए आक्रमण की योजना बनाई तो बरा के प्रयत्न तथा श्रीमती बोआर्ने के प्रभाव से उसने उत्तरी इटली होकर ऑस्ट्रिया पर आक्रमण किया।
- नेपोलियन को जिस सेना का सेनापतित्व दिया गया था, उसके अन्य बहुत से अफसर उसकी अपेक्षा बहुत अधिक आयु के तथा अनुभवी थे। परंतु नेपोलियन ने इस आक्रमण में जिस वीरता तथा प्रतिभा का परिचय दिया उससे वह अपनी सेना का नायक बन गया।

डायरेक्टरी सरकार की असफलता

- यूरोपीय राज्यों का मुकाबला करने में डायरेक्टरी सरकार इतनी सक्षम नहीं थी कि वह देश की रक्षा कर सके। अतः इस समय फ्रांस को नेपोलियन जैसे सेनापति की आवश्यकता थी। डायरेक्टरी के शासन ने फ्रांस को कमजोर बनाया था और देश में भ्रष्टाचार फैलाया था।

Edit with WPS Office

डायरेक्टरी सरकार की असफलता

- नेपोलियन ने कुछ सहयोगियों को मिलाकर डायरेक्टरी के अंत के लिए षड्यंत्र रचना आरंभ कर दिया। यह निर्णय लिया गया कि नेपोलियन अपने विश्वासपात्र सिपाहियों के साथ पांच सौ की सभा पर हमला करे और वहां जाकर अपने विरोधियों को निकाल बाहर करे।
- 9 नवंबर 1799 ई. को पांच सौ की सभा पर आक्रमण किया गया और राज प्रसाद को घेर लिया गया। अपनी सिपाहियों की मदद से नेपोलियन ने सभा से अपने सारे विरोधियों को बाहर निकाल दिया।
- अब निश्चय किया गया कि डायरेक्टरी के अंत तक फ्रांस का शासन 3 काउंसलों के हाथ सुपुर्द कर दिया जाए तथा 'काउंसल' देश के लिए एक नवीन शासन-विधान की रचना करे। नए शासन विधान की कुछ अन्य विशेषताएं भी थीं, जिनमें एक थी नेपोलियन को 'प्रधान काउंसल' के पद पर नियुक्त करना। 'प्रधान काउंसल' बनकर नेपोलियन ने सारी सत्ता अपने हाथ में ले ली।

Edit with WPS Office

क्रांति की प्रवृतियां एवं नेपोलियन का उदय

- फ्रांस की राज्य क्रांति के पश्चात देश की परिस्थितियों ने नेपोलियन की सफलता में काफी सहयोग दिया। 1789 ई. में फ्रांस में क्रांति असंतोष के कारण हुई थी ना कि राजतंत्र को को बदलने के लिए। नागरिक, निरंकुशता, आर्थिक कष्ट और सामाजिक असमानता से असंतुष्ट थे, क्योंकि इनके कारण उन्हें कष्ट उठाने पड़ते थे और अपनी मर्यादा खोनी पड़ती थी। अतः फ्रांसीसी जनता इस सरकार को हटा देना चाहती थी। दूसरे शब्दों में वह शासन की नीति और आर्थिक तथा सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन लाना चाहती थी।
- पतनोन्मुख आर्थिक दशा- वस्तुओं की कीमतें बढ़ रही थी, आर्थिक दशा पतनोन्मुख थी। आतंक के साम्राज्य के पश्चात भी नरम विचार वाले साम्राज्यवादी लोगों का देश में वर्चस्व था, जिससे आर्थिक दशा सुधरने की संभावना कम हो चुकी थी। नेपोलियन के सत्ता हस्तगत करने के पूर्व इस आर्थिक दुर्दशा के कारण फ्रांस की जनता इतनी उब चुकी थी कि वह आदर्शों और मूल्यों को त्याग कर भी इस स्थिति से उबरना चाहती थी।

Edit with WPS Office

क्रांति की प्रवृतियां एवं नेपोलियन का उदय-1

- मध्यमवर्ग द्वारा नेतृत्व - फ्रांस में विशेषकर मध्यमवर्ग के लोग अपनी जरूरतों के लिए इस परिवर्तन की तीव्र इच्छा रखते थे। यह वर्ग तत्काल स्थितियों को अपने अनुकूल भी पा रहा था। पुरातन व्यवस्था का खोखलापन जाहिर हो गया था। परिवर्तन के जोरदार समर्थक मध्यमवर्गीय लोगों ने आम जनता के जीवन की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक कठिनाइयों को सामने रखकर लोगों को प्रेरित किया तथा उन्हें अधिक से अधिक असंतुष्ट बनाया था ताकि वह भी परिवर्तन के लिए तैयार हो जाएं।
- फ्रांसीसी क्रांति के पश्चात परिवर्तन आए पर वह दूसरे तरह के थे। इन परिवर्तनों से आम जनता को लाभ ना होकर मध्यमवर्गीय लोगों को हुए। पादरियों तथा कुलीनों के हाथ से संपत्ति अवश्य छीन ली गई किंतु उन पर जनता का स्वामित्व ना होकर धनिकों का स्वामित्व स्थापित हो गया।
- संविधान भी बना और मताधिकार भी मिले पर आम जनता को मताधिकार ना मिलकर उन लोगों को मिला जो संपत्ति रखते थे और राज्य को 'प्रत्यक्ष कर' देते थे। फ्रांस की जनता ने रोटी के लिए भी क्रांति की थी, परंतु रोटी सस्ती नहीं हुई थी।

Edit with WPS Office

फ्रांसीसी क्रांति के उद्देश्य का असफल होना

- फ्रांसीसी क्रांति के उद्देश्य का असफल होना - सुव्यवस्थित समाज के लिए, कानून की एकरूपता के लिए तथा सुव्यवस्था के लिए असंतुष्ट व्यक्तियों ने क्रांति की थी, लेकिन क्रांति के बाद समस्त देश में अराजकता, आतंक एवं अव्यवस्था फ़ैल गई थी। क्रांति के उद्देश्य असफल हो रहे थे। डायरेक्टरी के शासन में तो भ्रष्टाचार अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया था। विकास के सारे कार्य तथा सुख-सुविधा के सारे साधन शिथिल पर गए थे। पुरातन व्यवस्था के बाद क्रांति ने जिस नवीन व्यवस्था को जन्म दिया वह निष्प्राण एवं निष्क्रिय थी, जिससे लोगों में असंतोष होना स्वभाविक था।
- फ्रांस में एक विचित्र स्थिति उत्पन्न हो गई थी। क्रांति जिस परिवर्तन के लिए की गई थी, वह परिवर्तन आए अवश्य थे पर वह क्रांति विरोधी हो रहे थे। क्रांति के उद्देश्यों की पूर्ति नहीं कर रहे थे। ऐसी स्थिति में विकल्प खोजा जाने लगा। किसी ऐसे व्यक्ति की खोज की जाने लगी जो अव्यवस्था की जगह व्यवस्था, अराजकता की जगह शांति और अस्थिरता की जगह स्थिरता और पलायन करते जीवन की जगह ठहराव ला सके। ऐसा व्यक्ति नेपोलियन ही था जिसकी ओर लोगों का ध्यान गया।

Edit with WPS Office

तत्कालीन परिस्थितियां में नेपोलियन बेहतर विकल्प

- क्रांतिजनित दुर्व्यवस्था के काल में नेपोलियन एक ऐसा विकल्प बनकर आया जिसने लोगों को अब तक बेहतर व्यवस्था और गरिमा देकर उन्हें अभिभूत कर दिया था। उनके हृदय में नायक बन कर बैठ गया था। अपनी तेज चरित्र के गुणों से उन्हें अपनी ओर आकर्षित कर रहा था।
- कन्वेंशन, डायरेक्टरी तथा कोंस्युलेट की तात्कालिक परिस्थितियों में नेपोलियन ने अपनी योग्यता का बेहतर परिचय दिया था। क्रांति का पुत्र बनने की उसने चेष्टा की और सेनापति के रूप में फ्रांस के दुश्मनों को पराजित कर वह नायक बन बैठा था।
- फ्रांस की सीमाओं में विस्तार लाकर उसने विजेता की जगह पा ली थी और वह देश की गरिमा तथा प्रतिष्ठा का उन्नायक कहलाने लगा था। सुधारवादी कदमों को उठाकर उसने समस्त देश के नागरिकों को तत्काल प्रगति करने का तथा सुविधाजनक जीवन जीने का अवसर दिया। फलतः समाज के लगभग सभी लोग उसे एकमात्र विकल्प समझने लगे थे।

Edit with WPS Office

- गत वर्षो की उसकी सफलताओं की पृष्ठभूमि में लोगों में विश्वास होने लगा था कि वह सब कुछ कर सकता है। अतः सभी वर्ग के लोगों ने उसे ही विकल्प के रूप में स्वीकार किया। धनिक लोग अपनी सुरक्षा की आशा में नेपोलियन के साथ हो गए थे। गरीब लोग उसकी सहायता चाहते थे। भगोड़े फ्रांस लौटना चाहते थे। क्रांतिकारी इस कारण साथ थे कि उन्हें देश निकाला या अन्य सजा ना मिले। साहसी व्यक्ति विजय की आशा के साथ थे और कायर व्यक्ति स्वयं की रक्षा के लिए।
- कुछ घृणित अराजकतावादियों को छोड़कर शेष लोग क्रांतिकालीन हिंसात्मक आतंक तथा मूर्खता से इतना उब गए थे कि उनके लिए कोई भी परिवर्तन बेहतर था। राजतंत्रवादी नेपोलियन में पुरातन व्यवस्था के लौटने की आशा देखते थे। साथ ही तटस्थ लोग केवल इसी में शांति व्यवस्था की संभावना देखते थे।
- निष्कर्ष
- कुल मिलाकर इतना तो कहा ही जा सकता है जिस फ्रांसीसी नागरिकों ने क्रांति के लिए संघर्ष किया, नवीन संविधान बनाकर नागरिक स्वतंत्रता प्राप्त किया उन्हीं नागरिकों ने कुछ वर्षों में ही क्रांति को भूलाकर एक अधिनायक नेपोलियन को अपना शासक स्वीकार कर लिया। यह घटना विस्मयकारी अवश्य लगती है किंतु समसामयिक घटनाओं के अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि फ्रांस के सामने उस नाजुक घरी में संभवत नेपोलियन के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं था।

Edit with WPS Office